कविता - कचरा बीनते बच्चे

ये कचरा बीनते बच्चे।
ये रोटी छीनते बच्चे।
भूख से मात खाए -
ये नीयत चीन्हते बच्चे।

ये थैला उठाए बच्चे।
ये जग के सताए बच्चे।
आंखों में आंसुओं के -
ये सागर छुपाए बच्चे।

ये दु:खों के साये बच्चे।
ये द्वार से भगाए बच्चे।
भूख की सिलवटों को -
ये पेट पर सजाए बच्चे।

ये जीवन से हारे बच्चे।
ये किस्मत के मारे बच्चे।
इन्हें भी हम प्यार दें -
ये भी तो हैं प्यारे बच्चे।

ये घर से बुहारे बच्चे।
ये दिल के छुहारे बच्चे।
दामन ये तर कर देंगे -
ये वर्षा की फुहारें बच्चे।

ये शिक्षा से वंचित बच्चे।
ये नहीं हैं किंचित बच्चे।
इनके भी कई अधिकार हैं -
ये हैं उनसे निश्चिंत बच्चे।

ये भी प्यार चाहें बच्चे।
ये ख़ुशबू के फाहे बच्चे।
इन्हें घिनौने समझो न -
ये हैं न आहें बच्चे।

ये फूलों - से फूल बच्चे।
ये चंदन हैं , न धूल बच्चे।
ये भी अच्छे इंसां बने -
ये हैं न फ़िज़ूल बच्चे।

अशोक आनन
+ जूना बाज़ार , मक्सी
जिला - शाजापुर (म.प्र.)
पिनकोड : 465106 (भारत)
M. N. - 9977644232
Email : ashokananmaksi@gmail.com